गुटीय घमासान से ग्रस्त भाजपा

पहले पेज से जारी...

वेटिंग प्रधानमंत्री के रूप में लालकृष्ण आडवाणी को सामने कर भले ही दिल्ली के तख्ते ताउस पर कब्जा करने का ख्वाब भाजपा देख रही हो लेकिन देश की इस अनुशासित पार्टी की हालत अनुशासन के मामले में तार-तार हो गई है. आज पार्टी का हर दूसरा नेता पार्टी में अपना गुट बनाने के लिये बेताब हो ऐसा कोई राज्य नहीं है. जहां पार्टी में गुटीय घमासान न हो. गुजरात को माडल राज्य बनाने की कोशिश में जुटी भाजपा और मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को स्टार प्रचारक प्रोजेक्ट करने वाली पार्टी का यह राज्य भी गुटीय घमासान से बच नहीं

पाया है. तो फिर म.प्र., राजस्थान, छतीसगढ़, हिमाचल, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, कर्नाटक और उड़ीसा की तो बात करना ही बेमानी है. इन सभी राज्यों में भाजपा कई गुटों में बटी हुई है. जितने नेता उतने गुट और सभी गुटों के दिल्ली में भी अलग-अलग संरक्षक भी विद्यमान. सुषमा स्वराज, अरूण जेटली, राजनाथ सिंह, मुरली मनोहर जोशी, नरेन्द्र मोदी सहित हर बड़े नेता का हर राज्य में कोई न कोई सिपहसालार मिल ही जाएगा. इस तरह ऊपर से लेकर नीचे तक भाजपा कई गुटों में बंटी हुई है. और कभी कभी तो यह गुटीय घमासान चरम पर पहुंच कर अखबारों की सुर्खियां तक बन जाता है. हाल ही में अरूण जेटली और राजनाथसिंह के बीच शुरू हुए घमासान को भले ही संघ परिवार के हस्तक्षेप से ठंडा कर दिया गया हो मगर अभी भी लोगों को शंकर है कि यह घमासान ज्यादा दिनों तक ठंडा नहीं रहेगा.

कल तक गुटबाजी के लिये कांग्रेस को याद किया जाता था लेकिन अब भाजपा उससे भी एक कदम आगे निकल गई है. इसी लिये हर दिन दिल्ली के अखबारों में इस पार्टी के गुटीय घमासान की एक न एक खबर अवश्य होती है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में तो अब यह सवाल भी पूछा जाने लगा है कि आडवाणीके बाद भाजपा का क्या होगा. क्या यह पार्टी आडवाणी के बाद भी एकजुट बनी रहेगी. या फिर जिस तरह नेहरू के बाद ढेर सारी कांग्रेस हो गई थी उसी तरह आडवाणी के बाद ढेर सारी भाजपा हो जाएगी. जैसे भाजपा जे, भाजपा एम, भाजपा एस, भाजपा आर, भाजपा वी आदि जे याने जेटली, एम याने मोदी, एस याने सुषमा, आर याने राजनाथ, वी याने वेंकैया....

आयकर विभाग ने मांगा 375 करोड़ का हिसाब

भोपाल । राजधानी में आयकर विभाग की कार्यवाही से हड़कंप मचा हुआ है। धानवीन में उसे 375 करोड़ की अघोषित आय का पता चला है। विभाग ने 500 लोगों के आयकर रिटर्न की छानवीन के बाद उनसे 112 करोड़ रूपए जमा कराने को कहा है। जिसमें एक अकेले शीर्ष संस्थान को 31 करोड़ रूपए जमा कराने हैं। विभाग ने 200 लोगों के खाते भी सील किए हैं।

राजधानी से जुड़ें सैकड़ों संस्थानों और व्यक्तियों के इनकम टैक्स रिटर्न की छानबीन में आयकर विभाग को 375 करोड़ से ज्यादा की छुपी आय का पता चला है। इसके बाद दिए गए नोटिस पर कर जमा करने में आनाकानी करने वाले 200 लोगों के बैंक खातों से लेन-देन पर रोक लगा दी हैं। विभाग ने इन लोगों को सौ करोड़ से अधिक आयकर जमा करने का नोटिस दिया है। इनमें बिल्डर्स, ज्वैलर्स, कालेज संचालक, उद्योगपति व अन्य व्यवसायी शामिल हैं।

राजधानी के एक संस्थान तो उसके पास आए सौ करोड़ रूपए के बारे में स्पष्टीकरण ही नहीं दे सका विभाग ने उन्हें 31 करोड़ रूपए का आयकर जमा करने का नोटिस दिया हैं। रिटर्न की जांच में करीब 500 लोगों को डिमांड नोटिस भेज कर आयकर जमा करने को कहा गया था। इन 500 लोगों को लगभग 112 करोड़ रूपए आयकर जमा करने को कहा गया। इस हिसाब से लगभग 375 करोड़ रूपए की अघोषित आय इन रिटर्न की जांच में सामने आई है। इनमें से 200 लोगों द्वारा कर जमा न करने पर विभाग ने उनके खाते सील कर दिए हैं।

डर्टी मनी और चुनावी बिसात

'डर्टी बम' की तरह इस पैसे को नाम दिया गया है, 'डर्टी मनी'। ऐसा पैसा, जो सरकार बनाने-गिराने से लेकर हर तरह के षडयंत्र को साकार कर सके। नाम से ही जाहिर है कि यह पैसा हलाल का हो नहीं सकता। अमेरिका में डर्टी मनी को सबसे पहले सेक्स के व्यापार से जोड़ा गया। बाद में डर्टी मनी ड्रग्स के धंधेबाज, कर चोरी करने वाले व्यापारी, बेईमान अफसरों, मंत्री और माफिया के बेनामी अकाउंट से जुड़ गया। पिछले कई दशकों से दुनिया की ताकतवर सरकारें 'डर्टी मनी' से बावस्ता हो गई हैं। दुनियाभर में उन्हें अपनी मर्जी की सरकार बनानी होती है। अब पता नहीं इसे रूटीन कवायद कहें, या सचमुच का सरोकार, पर खबर यह है कि गृहमंत्रालय और आर्थिक अपराध से जुड़ी एजेंसियां 'डर्टी मनी' को लेकर चौकस हैं। महामंदी की मार झेल रहे इस देश में अभी इस बात को बहस के लायक नहीं समझी जा रही है कि चुनाव कराने के लिए दस हजार करोड़ आएंगे कहां से। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज ने मोटा-मोटी जानकारी दी है कि राष्ट्रीय पार्टियां 43.50 अरब रुपए चुनाव पर खर्च करेंगी। क्षेत्रीय पार्टियों का लक्ष्य कोई 10 अरब खर्चने का है। मतदाताओं के बीच 20 से 25 अरब रुपए लुटाए जाएंगे। यह पूछने वाली बात है कि क्यों बम-बंदूक, दारू और दौलत के बिना चुनाव संभव नहीं ?

इसे कहते हैं 'न्यूसेंस वैल्यू' जिसे उचित ठहराते हुए अमर सिंह जैसे नेता कहते हैं- 'चर्चा, पर्चा और खर्चा चुनाव में तो होना ही चाहिए।' सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के मुताबिक 'बिकाऊ वोटरों की लिस्ट में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक सबसे टॉप पर हैं।' इस मामले में गृह मंत्रालय में आर्थिक अपराध शाखा के वरिष्ठ अफसरों की सोच थोड़ा हटकर है। पिछले चुनाव के दौरान कर्नाटक में सबसे अधिक विदेशी पैसा आया था, जिससे इस संदेह को बल मिलता है कि चुनाव में बाहर से आने वाले पैसे की बड़ी भूमिका है। गृहमंत्रालय के अफसरों का मानना है कि फॉरन कंट्रीब्यूशन रगुलेशन एक्ट (एफसीआरए) के तहत जो 30-31 हजार संस्थाएं पंजीकृत हैं, वे सभी बाहर से पैसा नहीं मंगा पाती हैं। पिछले चुनाव के समय 14 हजार 700 संस्थाओं के नाम 6 हजार 256 करोड़ रुपए विदेश से आए थे। ताजा आंकड़ों के अनुसार 14 हजार 926 अरब रुपए एफसीआरए की जानकारी में आए हैं। दिल्ली, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश ओर केरल में सबसे अधिक विदेश (ज्यादातर अमेरिका) से पैसे आए हैं

लिफ्ट लेकर लिफ्ट होने की कवायद!

चुनाव-चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

चुनाव चक्रम के चलते भारतीय जनशक्ति पार्टी की नेता उमा भारती ने भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी के लिये जय हो का नारा लगा दिया है. राजनीति में सब कुछ जायज है, नाजायज जैसा उसमें कुछ भी नहीं होता शायद इसलिये सिद्धांतों और विचारों के सशक्त बल भी ढीले और कमजोर पड़ जाते हैं. उमा भारती ने पीएम एन वेटिंग के लिये जो सार्वजनिक समर्थन जाहिर किया है उससे यही प्रतीत होता है.

याद कीजिए उस उमा को जो भाजपा की केन्द्रीय बैठक में इन्हीं आडवाणी को तीखे तेवर दिखा कर बैठक से बहिष्कार कर गई थी. याद करने लायक उनके तेवर और तीक्ष्ण शब्द बाण हैं जो उन्होंने सरे-सरे और खरे-खरे आडवाणी को सुनाए थे. बाद में उन्होंने भारतीय जनशक्ति पार्टी का निर्माण कर लिया और अपने विश्वसनीय प्रहलाद पटेल और कांग्रेस के विवादित इंदर प्रजापत को साथ ले लिया था. अपने बूते पर नई पार्टी खड़ी करके भाजपा को मध्यप्रदेश में चुनौती देने का दंभ रखकर चली उमा भारती की हवा विधानसभा चुनाव में तब निकल गई जब अपने ही प्रभाव वाले इलाके से वे स्वयं चुनाव हार गई. दरअसल चुनाव में जो पहिए पंचर हो जाते हैं वे जल्दी दुरुस्त नहीं होते यही ख्याल कर उमा भारती संसदीय चुनाव में लिफ्ट लेकर भाजपा की चलती गाड़ी में बैठ गई है. जाहिर है जब किसी से लिफ्ट ली जाती है तो सद्भावना वश उसकी तारीफ करन पड़ती है. इसलिये उमा भारती ने आडवाणी जी की तारीफ में कसीदे काढ़ना शुरू कर दिये हैं. इसके पहले भाजपा उसने यह कहें कि मेडम, आपक मुकाम आ गया है आप उतर सकती है, उमा भारती चाहती हैं कि तब तक वे ऐसी स्थिति निर्मित कर लें कि भाजपा की गाड़ी उन्हें बार-बार घर से लेने आए.

बहरहाल, हम भी उमा भारती के राजनीति में नफे-नुकसान और मापने की बात करते हैं. उमा भारती की पार्टी भाजश बीते तीन-साढ़े तीन साल में जो जगह नहीं बन पाई वह उसे भाजपा से संजीवनी की तरह मिलेगी और उमा भारती की पुर्नस्थापना हो जाएगी. हालांकि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथसिंह ने चुटकी लेते हुए कहा है कि उमा भारती की पार्टी के पास चुनाव लड़ने के लिये धन नहीं है, इसलिये वे भाजपा का काम करना चाहती हैं. खैर जो भी हो उमा भारती ने अपनी जगह को पहचान लिया है. अपने लोगों की ताकत को पहचान लिया है इसलिये बेहतर समझा कि राजनीति में रहना है तो अपने से बड़ा पार्टी को समझो. इसीलिये आडवाणी के बहाने उन्होंने भाजपा का जयकारा लगा दिया, उमा भारती के इस फैसले से उनकी राजनीति को दो ज्यादा नुकसान नहीं हैं लेकिन उनकी व्यक्तिगत छवि और ज्यादा अविश्वसनीय हो गई है. लोग उन्हें अब तेजतर्रार राजनेता नहीं वाचाल प्रवृत्ति का अस्थिर नेता मानने लगेंगे. ऐसी स्थिति में उमा भारती की वह संपूर्ण छवि बिगड़ गई है जिसमें उन्हें मां गौरी और मां काली का शांत और तेज स्वरूप झलकता था.

उमा भारती का राजनैतिक वजन भारतीय जनता पार्टी के भीतर भी उतना वजनदार नहीं रहेगा कि लोग उनकी बात मानें या उन्हें तवज्जों दें. हालांकि आरएसएस और हिंदुवादी संगठनों की तरफदारी से ही उमा भारती की वापसी की शुरूआत हुई है. और ये संगठन ही उन्हें भाजपा के भीतर अहमियत भी दिलवाएगी. लेकिन जो छिछालेदारी उमा भारती ने आडवाणी की थी वह कसक न तो लालकृष्ण आडवाणी के मन से जाने वाली है और न ही भाजपा से . ऐसे में उमा भारती भाजपा में पहुंचकर भी बे-कद ही नजर आएगी. प्रचार-प्रसार में भाजपा उन्हें ज्यादा जोड़ना नहीं चाहती लेकिन वे प्रचारक बनकर दौड़ लगाती भी हैं तो भी इसका जन असर होते ज्यादा नजर नहीं आने वाला है. इसलिये उमा भारती का जय हो नारा सिर्फ उनके अपने लिये है और जो सिर्फ उनकी अपनी कमजोरी को जाहिर करते हैं. यह समझकर वे चाहती है कि भाजपा उन्हें फिर लिफ्ट करवा दे.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८

cmyk